वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

जुलाई, अगस्त – 2018

* ऐसे इन्सानों को क्या कहें?
* मुझ अदना और तुच्छ पर महा उपकार
* भावों की दुनियां और उसकी हकीकत
* सुन्दर साध्वी
* सुखदेव जी की पुस्तक का एक (Review)
* शुभ संग्राम

आत्मिक हमदर्दी भरा एक बुजुर्ग अनुभवी सेविका का पत्र

3104/ Sec 35-D
Chandigarh
6.10.94

प्रिय बेटे जी

सत्यदेव की जय और बहुत-बहुत प्यार।

बेटे मैं यह पत्र लिख रही हूँ इसलिये कि मैं तुम्हें कष्ट में देखना नहीं चाहती हूं। मैं उस दिन से ही लिखने की सोच कर कुछ लिखने बैठी हूं क्योकि आदत नहीं। तुम्हारे पापा जी लिख देते थे चिट्ठियां, अब मुझे बहुत ही कठिन हो गया। पर अब कुछ 2 आदत डालने की कोशिश है। गुरू महाराज की कृपा से मैं यह चाहती अवश्य हूं कि किसी का दुख उचित तौर पर दूर कर सकूं तो मुझे तसल्ली होगी, होती है। वैसे तो दोनों भाई गले मिले तो तसल्ली हुई। पता लगता है तुम पूरी तसल्ली में नहीं आये। तो फिर दिल में व्याकुलता हुई लिखने की। वैसे भी चाहती हूं कि यदि मैं तुम जैसे कई पहलुओं में अच्छे आत्मा के लिये मुफीद हो सकूं तो सौभाग्य समझूंगी।

बेटा! श्रीमान धर्मबल जी, श्रीमान देवत्व सिंह जी के विषय में अपनी घटना का बार बार जिकर करते थे और यह भी बताते थे कि जब भगवान ने पता लगने पर पूछा, कि क्या तुम अपने खिलाफ सुन सकते हो तो उन्होंने उत्तर दिया, केवल आप से। तो बार बार कहते थे कि अब तो भगवान नहीं है फिर... ...। तो मैंने तो अपने लिये यह पक्का सोचा हुआ है कि अपने खिलाफ यदि बच्चा भी कहे तो सुनना मेरे लिये हितकर है वरना direct भगवान की रोशनी हर समय न मिलती है न हमें मिल सकती है अपने विषय में। हम सब में ही गलवा है नीच रागों का। तब भले का यही मार्ग है गलत फहमी बहुत जल्दी होती है। अपनी तो फिर लिखूंगी व बताऊंगी पर श्रीमान धर्मबल जी बार-बार बताते थे कि एक मास्टर किसी घर में खाना खाता था, रोज मूंग की दाल खाता था बनती भी थी। एक दिन पेट खराब के कारण लड़के के through कहलवाया कि मूंग की दाल बना लें। लड़के ने उल्टा कह दिया। मास्टर साहब फट गये कि मैंने कहलाया फिर भी.....। अच्छा था उपकार सामने रखते और वह ठीक प्रकार से पूछ भी सकते थे। तो हम लोग तो यह हैं। हमें संभलना है मेरी कोई भले की बात सूझे तुम आराम से कह सकते हो। तुम में कई गुण हैं। भगवान की कृपा से तुम कुछ भलाई के भी काम करते हो। तुम्हारा भला हो और भला हो। Emotional तबियत हानिकारक है यह उस घटना को याद करके लिखा है। जब रोशनी मिलने पर कोई गलती मान रहा है तब तुम बजाय भगवान को उस समय धन्यवाद देने के, उसके कसूर की तरफ जोर से एक बार तो बढ़ रहे थे और भी घटना है। इसका मतलब यह नहीं कि मैं पाक पवित्र हूं Emotional या कुछ, और नहीं। केवल हमने इस मार्ग पर एक दूसरे की आत्मिक हमदर्दी को लेकर सहाय कारी होना है। इसलिये कष्ट न पाना। मां की तरह हितकारी समझ माफ कर देना - तुम इस आकांक्षा से कि यह पत्र तुम्हारे लिये हितकर हो और भले को लेकर हमारा सम्बन्ध, और गाढ़ हो।

- तुम्हारी जीजी

धर्म जीवन

खण्ड 31 अंक 5
जुलाई, अगस्त - 2018
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

ऐसे इन्सानों को क्या कहें बुद्धिमान, मुर्ख या पागल?

1. सब जानते हैं कि सिगरेट पीना सेहत के लिए हानिकारक है। तम्बाकू और शराब पीने से लीवर (lever) की हानि हो जाती है। किडनी पर भी इसका बुरा असर पड़ता है, उमर घट जाती है, हृदय - रोग के होने की भी बहुत बड़ी सम्भावना होती है। सेहत की हानि तो होती ही है, पैसों की अलग हानि होती है। आने वाली संतान पर भी बुरा असर पड़ता है। कई लोगों को इस नशे की बिमारियों से तड़पते हुए देखा है और नशेदार चीज़ों पर लिखा रहता है। "It is injurious to health" अगर कोई यह सब जानकर भी नशे इस्तेमाल करे तो उसे क्या कहेंगे बुद्धिमान, मूर्ख या पागल?

2. शराब सेहत के लिए हानिकारक है। इससे जो सेहत को नुकसान होता है वह भी बहुत ज्यादा है। शराब पीने से Accident भी होते है, Crime भी होते है। दिल दिमाग सबके लिए हानिकारक है। उम्र कम हो जाती है। ये सब जान कर भी लोग इसका अधिक इस्तेमाल करते है और अपनी शान समझते है। इसके नुकसान के बारे में सब किस्म के मीडिया में बताया जाता रहता है। फिर भी जो लोग इस्तेमाल करते है उनको आप क्या कहेंगे?

3. आदिकाल से यह माना जाता है कि किसी की जान लेना महा पाप है। अहिंसा को परमोधर्मा माना गया है फिर भी लाखों करोड़ों जानवरों की रोज़ जान ली जाती है और यह इंसान जो ऊपर से सफेद कपड़े पहनकर शिष्ट लगता है वो रोज़ इन जानवरों को खाकर अपने पेट में इन जानवरों की कबरें बनाता है। ऐसे आदमियों को हम क्या कहेंगे?

4. यह सब जानते है कि रिश्वत लेना महापाप है। यह गरीब जनता का देश है जिसमें बहुत सारे स्त्री पुरूष और बच्चे कम खाकर जीवन व्यतीत करते हैं, ऐसे देश में कुछ लोग जो करोड़ों रुपया रिश्वत या घोटाले के द्वारा देश का रुपया बाहर भेज देते हैं या अपने जाति इस्तेमाल के लिए ले जाते हैं। वो क्यों नहीं समझ पाते कि जो लोग फुटपाथ पर सोते हैं यह उनका हक है ऐसे लोगों को हम क्या कहेंगे?

5. सारे देश में सब जानते हैं कि चोरी बहुत खराब हैं चोरी और सीनाजोरी, Income tax की चोरी, घरों से जेवरात, पैसों की चोरी, राह चलते

स्त्री पुरूषों की चीजों की चोरी के माध्यम से उनके अधिकारों का जो बड़े पैमाने पर अपहरण हो रहा है, यह उन लोगों को नज़र नहीं आता। ऐसे लोगों को हम क्या कहेंगे?

6. लड़के की इच्छा में लड़कियों को पैदा होने से पहले ही हत्या कर दी जाती है। वो बेचारी दुनियाँ में आने से पहले ही जान से जाती हैं। ऐसे भयानक अत्याचार को हम क्या कहेंगे?

7. बहुत चाव से शादियाँ की जाती है। माँ बाप अपने जिगर के टुकड़े, बेटियों को बहुत कुछ देकर विदा करते हैं। हमारे अभाग्य देश में बहुत सारी घटनाएँ लगातार हो रही हैं कि जहाँ दहेज के लालची ससुराल वाले अपनी पुत्र वधुओं को जलाने का वहशी काम करते हैं। एक जीते जागते वजूद को तेल डालकर जला देना या किसी और माध्यम से हत्या कर देना कितना जघन्य अपराध है। उसको प्रयाप्त मात्रा में जाहिर नहीं किया जा सकता। ऐसे हत्यारों को क्या कहेंगे?

8. जायदाद के झगड़ों में भाईयों में लड़ाई झगड़े, गोली का चलना, मुकद्मे बाजी परिवारों में दुश्मनी यह आम देखी जा सकती है। ऐसे हत्यारों को क्या कहेंगे?

9. जो पति पत्नी पढ़े लिखे होकर, सभ्य होकर, बच्चों के माता पिता होकर आपस में लड़ने का और एक दूसरे के प्रति बेवफाई का जो महाक्रूर दृश्य पेश करते हैं और बच्चों के लिए और अन्य जनों के लिए जो खराब दृष्टांत पेश करते है ऐसे दु:खदायी दृश्य पैदा करने वालों को हम क्या कहेंगे?

10. यह सब जानते हैं कि दुनिया एक सराय है थोड़े से वक्त के लिए इस धरती पर इंसान आते हैं और चले जाते हैं और लगातार चले जाने का यह दृश्य देखकर भी जो लोग यहाँ के सामानों के साथ मोह बन्धन से बंध जाते हैं और दुख पाते हैं । ऐसे जनों के बारे में हम क्या कहेंगे?

11. धर्म स्थानों पर बहुत शोर है। ऊँचे ऊँचे भजन गाए जाते हैं, शोर मचाया जाता है कि धर्म हासिल करना चाहिए। बड़े बड़े इक्कठ और प्रवचन होते है कि धर्म हासिल करना चाहिए मगर 98% के करीब लोग पाप का जीवन व्यतीत करते है। ऐसे लोगों को क्या कहेंगे?

12. चार दिन की ज़िंदगी है। हकूमत, मान-मर्तबा हासिल करने के लिए ऐसे झूठे लारे और झूठे वायदे जनता के साथ किए जाते हैं। जिसका दृश्य हम चुनाव के दिनों में देखते हैं। साफ महसूस होता है कि यह सब झूठ बोल रहे हैं। वो भी जानते हैं कि यह सब झूठ बोल रहे हैं। हकूमत हासिल करने के लिए पागलों की सी हरकतें है ऐसे जनों को क्या कहेंगे?

13. इस बहुत बड़ी कायनात में यह पृथ्वी एक छोटा सा स्थान है। इसमें चन्द सालों का बसेरा है। यह भिन्न भिन्न मुलकों में बंटी हुई है। अपने मुलक के लिए दूसरों मुलकों पर अत्याचार जारी है। दूसरे मुलकों को खत्म करने के लिए बम्बों के ढेर बना लिए गए है। मुलकों वाले एक दूसरे से बड़े बड़े मेजों पर बैठकर अमन और भाई चारे की बातें करते हैं। भीतर से जोर शोर से जंग की तैयारी करते हैं और

जंगों में लाखों को हताहत करते हैं। सामने बेगुनाहों की हत्याएं की जा रही है। चन्द दिनों की जिन्दगी में ऐसा दृश्य पैदा करने वालों को क्या कहेंगे?

14. लोगों को अनियमिताओं के कारण स्वाददार वस्तुएं अनुचित ढंग से और अनुचित मात्रा में खाने के कारण भिन्न भिन्न प्रकार की बीमारियां लगी हुई हैं। जो लोग अपनी ही सेहत के लिए परहेज़ नहीं कर सकते समय पर दवाई नहीं खा सकते और नियम पूरे नहीं कर सकते और बीमार रहने के लिए मजबूर हैं। ऐसे लोगों को क्या कहेंगे?

15. सब जानते हैं कि प्रात: काल जल्दी उठना सेहत के लिए हितकर है और कुछ न कुछ भजन, पाठ विचार पूजा आदि करना बहुत लाभदायक हो सकता है। मगर लोगों की आदतें इतनी बिगड़ गई है कि अनाप-शनाप देर रात तक होटलों का भ्रमण करते हैं और देर रात को हानिकारक भोजन करते हैं। जो जान बूझकर ऐसा करते हैं ऐसे लोगों को आप क्या कहेंगे?

16. देखा जाता है कि लोग धर्म स्थानों पर जाते है। धर्म साधन करते हैं। ग्रन्थों को और धर्म गुरूओं को मानते है। किसी न किसी को गुरू ग्रहण करते हैं। शास्त्रों का पाठ करते हैं। बड़े बड़े भाषण करते हैं। बड़े बड़े चिन्ह धारण करते हैं। अपने ही धर्म की, अपने ही शास्त्रों की अच्छी बात नहीं मानते। उनका मंत्र यह है कि तन गुरू का, धन गुरू का, मगर मन गुरू का नाहीं। गुरू को मानते हैं गुरू की नहीं मानते। ऐसे लोगों को क्या कहेंगे?

17. विदेश यात्रा करते समय Beirut (लिबनांग) में यह देखने को मिला कि यहाँ की climate ऐसी है कि यहा फल (fruit) बहुत होता है। यहाँ घर घर में फलों के पेड़ वा बेलें देखी जा सकती है। मगर यह देखकर बहुत हैरानी हुई कि बिक्री के लिए यहाँ(fruits) की दुकानें बहुत कम हैं। और बड़े बड़े माँस के लोथड़ों की दुकानें यहाँ हर जगह है। पूछने पर पता चला कि यहाँ से बहुत से (fruits) बाहर भेजे जाते है और वहाँ से मोटा माँस यानि beef मंगवाया जाता है, शराब मंगवाई जाती है और जीवन दायक फल बाहर भेजना और मृत्यु दायक शराब और beef को मंगवाना इस दृश्य को देखकर आप क्या कहेंगे।

18. मिस्र (Egypt) के शहर में हम एक बड़े मकान में रहते थे। जिसके मालिक मकान ने बहुत सारे कबूतर पाल रखे थे। वो कबूतर इतने घरेलू थे कि बच्चों के साथ और बड़ों के साथ खेलते रहते थे। एक दिन मुझे कुछ कबूतर कम नज़र आए तो मैंने घरवालों से पता किया कि बाकी कबूतर कहाँ हैं? तो पता चला कि घरवालों ने मारकर उनको पका कर खा लिया है। जिनके साथ खेलते थे जिनको प्यार से पालते थे, उनको ही खाने वाली इस मनुष्य प्रकृति और मनुष्य को आप क्या कहेंगे? वहाँ पक्षी और चौपाए बहुत कम नज़र आते थे। पूछने पर यह पता चला कि यहाँ पर सब मारकर खा लिए जाते हैं। उस धरती का क्या हाल होगा जहाँ पक्षी और चौपाए न रहें? ऐसी समझ और ऐसी मानसिकता के बारे में सोचकर ही बहुत परेशानी होती है और यह भी पता चला कि जानवरों को मारने से पहले सजाया और

संवारा जाता है। ऐसी मानसिकता को आप क्या कहेंगे?

19. उसी देश में एक और बड़े शहर में एक बाज़ार के पास से हम गुज़र रहे थे तो वहाँ एक मकान नया ही बना था। उसकी दहलीज पर एक गाय को लटका कर उसका गला काटकर छोड़ दिया गया था और खून बह रहा था और पूछने पर पता चला कि मकान को बुरी नज़र से बचाने के लिए इस गाय की बली दी जा रही हो, वो लोग यह सब भूल गए कि मकान ईट, पत्थर, लोहे, सीमेंट, बजरी और लकड़ी आदि की उचित मात्रा के प्रयोग में लाने से पक्के और टिकाऊ बनते हैं। किसी जानवर की कुर्बानी से नहीं। अब ऐसी मानसिकता को सामने लाकर इतना दुःख होता है और यह नहीं समझ में आता कि ऐसे इंसान को हम क्या कहेंगे?

20. एक जगह पढ़ने का मौका मिला कि अमेरिका में दूध बहुत (Surplus) ज्यादा हो गया है और उस दूध को समुद्र में गिरा दिया गया है और जो गाय दूध देती थी उनकी गिनती कम करने के लिए हज़ारों गाय कतल कर दी गई हैं। इसी तरह सारा Surplus अनाज भी समुद्र में गिरा दिया गया। लेकिन गरीब देशों को नहीं भेजा गया। इस तरह दूध और अनाज को समुद्र में फैंकने की, गरीब और भूखे लोगों तक न पहुँचाने की जो मानसिकता है उसको क्या कहा जाए?

21. यह हम सब जानते हैं कि स्त्री पुरूषों को makeup के सामान और मंहगे जूते बनाने के लिए मंहगी किस्म की dresses, shoes and purses बनाने के लिए बहुत अच्छी किस्म के जानवरों का खून किया जाता है। अब इसको हम क्या कहेंगे?

22. अपने ही देश के लोगों के लिए खाने पीने की चीजों में बहुत हानिकारक मिलावट की जाती है। जहरीली शराब बेची जाती है। नकली दवाइयाँ बेची जाती है। दालों पर नकली रंग चढ़ाया जाता है। दूध में यूरिया और paint की मिलावट की जाती है। इससे लोगों की जो सेहत का नुकसान होता है, उसको देखकर ऐसा करने वालों को क्या कहेंगे?

23. ऐसा भी पढ़ने का मौका मिला है कि सरकारें अपने खजाने भरने के लिए शराब के लाइसेंस बेचती हैं। ऐसे ही जब लोग शराब पीकर बीमार होते हैं तो उनके इलाज के लिए हस्पताल खोले जाते हैं ऐसी मानसिकता को आप क्या कहेंगे?

24. हमारे देश में बहुत सारे गाँव ऐसे है जहाँ कोई शिक्षा संस्थान नहीं हैं। कोई चिकित्सालय नहीं है और जहाँ कोई छोटा मोटा शिक्षा संस्थान है, वहाँ बच्चों के लिए toilets नहीं हैं। उसी देश के पाँच सितारा होटलों में इतनी अय्याशी है, वहाँ इतना खाना बर्बाद होता है, इतना फिजूल खर्च होता है। एक ही देश में रहने वाले लोगों के बीच में इतना अन्तर और भेद देखकर परेशानी भी होती है और हैरानी भी होती है। ये मानवता जिस दशा में पहुँच गई है इस हालत को देखकर विचारशील और क्या कह सकते है? सिवाए इसके कि मानवता का भयानक पतन ही नहीं हुआ बल्कि पागलपन की अवस्था भी आ गई है।

25. घी बेच कर तम्बाकू खरीदना :- लाला

मुंशीराम जी कर्मचारी, देव समाज अक्सर सभाओं में बताया करते थे कि रायपुर रानी के आस पास देहात से गरीब मज़दूर मिट्टी की हांडियों में घी भर कर लाते थे। उसको रायपुर के बाज़ार में बेच देते और जो पैसे मिलते, उससे तम्बाकू खरीद कर ले जाते।

26. टी.बी से मौत :- पुरानी बात है एक वकील साहब को टी. बी हो गई। उस समय टी. बी. का कोई ईलाज नहीं था। डाक्टरों ने कहा कि अभी पहली स्टेज है फौरन पहाड़ पर चले जाओ, बच जाओगे। वकील साहब धन के पक्के अनुरागी थे। धन का अनुराग कहता था कि कुछ पैसे और कमा लो, फिर पहाड़ पर चले जाना। उनकी बीमारी बढ़ती गई। आखिर मजबूर होकर वह पहाड़ पर गए, परन्तु वहाँ से उनकी लाश ही वापिस आई। वकील होकर कानून पढ़कर भी उनकी इतनी अक्ल न आई कि पैसे मेरे लिए है न कि मैं पैसों के लिए हूँ?

27. पत्नी की हत्या - दिल्ली के डाक्टर जैन साहब आँखों के जगत में बड़े विख्यात डाक्टर थे। दिल्ली में वह राष्ट्रपति तक का इलाज करते थे। शानदार कोठी थी, कारें थी, बीवी-बच्चे थे, सब सुख सुविधा के सामान थे। उनके नर्सिग होम में एक लड़की काम करती थी जिससे उनका अवैध सम्बन्ध हो गया। इस सम्बन्ध में पत्नी रोक बनती थी। इसलिए इस रुकावट को दूर करने के लिए योजना बनाई गई। कहते हैं कि भाड़े के गुंडों से पत्नी को मरवा दिया गया। एक नीच सुख अनुराग ने डाक्टर साहब की अक्ल पर पर्दा डाल दिया। डाक्टर साहब और वह लड़की को जेल जाना पड़ा। डाक्टर साहब को फाँसी इसलिए नहीं हुई की वह आँखों के इलाज के विश्व प्रसिद्ध डाक्टर थे। बात यह है कि नीच सुख अनुराग मनुष्य को अन्धा और पागल बना देते हैं। उसकी तृप्ति के लिए वह कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाते हैं

28. राह चलती लड़कियों पर तेज़ाब :- आजकल लड़कियों पर राह चलते या किसी भी जगह पर तेज़ाब डालकर उनको नुकसान पहुंचाने की घटनाएं बढ़ती ही जा रही है। अपने स्वार्थ के पूरा न होने पर जो नौजवान ऐसा दुष्कर्म करते है और ऐसी लड़कियों या तो बेचारी मर जाती हैं या वो सदा के लिए अपाहिज और बदशक्ल हो जाती हैं और जब तक जीती रहती हैं वो तब तक उनके इस घिनौने अत्याचार की सजा भुगतती रहती हैं। ऐसी मानसिकता को जितना भी धिक्कारा जाए कम है। हम सबको मिलकर चाहिए कि इस विषय में आम जागृति पैदा करें।

29. अमानत में ख़यानत :- देव समाज के सभासदों के लिए एक प्रतिज्ञा यह भी है कि रुपये पैसे के मामले में अमानत में ख़्यानत नहीं करेंगे। अब नेचर में जिन चीजों को हम 'अपनी' कहते है परन्तु जो वास्तव में नेचर की ही हैं और हमें अमानत के तौर पर नेचर के विकासकारी विभाग में सेवाकारी होने के लिए मिली है, क्या हम इस अमानत में ख़्यानत नहीं करते? हमारा धन धरती भलाई के कारज में अधिक से अधिक काम आना चाहिए। वह हम बेईमान बनकर अपने नीच सुखों की प्राप्ति के लिए खर्च करते हैं। हम नेचर से भी

ठगी मारते हैं।

30. धर्म की दौलत छोड़ दुनियावी दौलत का लोभ :- एक जन धर्म की शिक्षा पा रहा था। खूब धन कमाने लगा। किसी ने कहा यह व्यक्ति बड़ा सयाना निकला। परन्तु एक आत्म बोधी कर्मचारी ने कहा कि सयाना नहीं मूर्ख निकला। हीरे जवाहारात से भी अधिक कीमती धर्म की दौलत को छोड़ कर दुनिया-परस्ती की ठीकरियों को इक्ट्ठा करने में लग गया।

31. भगवान देवात्मा की यह शिक्षा है कि किसी प्रकार का सुख लाभ करना तुम्हारे जीवन का लक्ष्य नहीं है। परन्तु किसी-किसी को छोड़कर हम भागते नीच सुखों के पीछे ही हैं। देवात्मा बताते हैं कि प्यार करने के लायक केवल दो ही चीज़ें है-विशुद्ध परोपकार और देवात्मा। परन्तु हम प्यार करते हैं नीच सुखों के विषयों को ही। हमारी बुद्धि को भी नीच सुखों ने जड़वत बना दिया है। यह जड़ होना भी पागलपन का ही लक्षण है।

32. भगवान देवात्मा फरमाते हैं :- "मेरी देव ज्योति ने मुझ पर सत्य प्रगट कर दिया है और मेरे सत्य अनुराग ने इसके साथ मेरे दिल का मेल कर दिया है कि मेरा अपना कुछ भी नहीं और जो कुछ है और जहाँ कहीं है, वह सब कुछ नेचर का है। मेरी हस्ती के साथ जो कुछ सम्बन्धित है, वह चाहे जानदार चीज़ हो या बेजान, वह भी मेरी नहीं बल्कि केवल नेचर की और केवल नेचर की है। सब कुछ नेचर का है और नेचर के विकासकारी नियम में मददगार होने से ही उसका सब से उच्च और श्रेष्ठ प्रयोग हो सकता है, जबकि जो कुछ है, वह नेचर का है तब वह चाहे इंसान की अपनी हस्ती हो और चाहे उसकी जायदाद आदि किस्म की चीज़ हो, उसकी नेचर के विकासकारी कारज में काम आने से सच्ची और असली सफलता हो सकती है, इसके बिना हरगिज नहीं। नेचर से प्रगट होकर और नेचर की चीज़ों पर उचित अधिकार पा कर प्रत्येक जन के लिए आवश्यक है कि वह नेचर की इस अमानत में ख़्यानत न करे। ऐसा करके अपने बुरे दृष्टांत के द्वारा अपनी और औरों की हस्ती का खून न करे।"

33. यह आसार जीवन :- हम जानते हैं कि एक दिन न हमारा यह शरीर रहेगा और न जिन चीजों को हम अपनी कहते हैं वे हमारी रहेंगी, वह सब हमसे छूट जाएंगी हम अपनी भली और बुरी गतियों से अपने आप में जो उच्च और नीच परिवर्तन पैदा कर लेते हैं, केवल वही हमारे साथ जाएगा, बाकी सब कुछ यहीं रह जाएगा। यह सब कुछ जान कर भी हम नीच सुखों की प्राप्ति और तृप्ति में इतने व्यस्त हैं कि उपरोक्त सच्चाई हमें दिखाई तक नहीं देती। ऐसा प्रतीत होता है जैसे हमारी बुद्धि को अधरंग हो गया है।

उपरोक्त बातों पर विचार करो और निर्णय करने की कोशिश करो कि आप किन लोगों में से हैं? अगर हो सके तो अपने जीवन में परिवर्तन लाओ, धर्मवान बनो, जीवन दायक नियमों का पालन करो और श्रेष्ठ इंसान बनो। अपने पीछे अच्छा दृष्टांत छोड़ जाओ। ऐसा न करने पर आप खुद ही निर्णय करें कि आपको लोग क्या कहेंगे?

(श्रीमान यशपाल जी भल्ला)

मुझ अदना और तुच्छ पर महा उपकार

गुरू महाराज के महान उपकारों में से मुझे यह भी विशेष उपकार अनुभव होता है कि बहुत समय तक उच्च संगत में वास करते करते, मुझे एक विशेष सोझी वा बोध पैदा हुआ और गुरू महाराज की ज्योति में यह स्पष्ट दिखाई देने लगा कि कैसे हमारे चौतरफा की संगत बेहद सूक्ष्म तरीके से, प्रत्येक मनुष्य पर अपना रंग चढ़ा देती है। मनुष्य को इसका आभास कुछ भी नहीं होता। जैसे हम अपने निवास स्थान को प्रतिदिन साफ करते हैं, समान की झाड़ पोंछ भी करते हैं, फर्शो पर पोचा भी लगाते है, परन्तु धूल मिट्टी के कण फिर डेरा लगा लेते हैं। उसी प्रकार हमारे ऊपर चौतरफा भीड़ अपने धूल के कण डालती रहती है और हमें इसकी कुछ ख़बर सार ही नहीं होती। विदेश जाकर लोग कैसे बोलचाल, रंग ढंग पहरावे और अन्य कई पक्षों में कुछ का कुछ बन जाते हैं। उनके बहुत सारे विश्वास बदल जाते हैं। वह अपने बदलने को चाहे वह पहरावा हो या विश्वास ठीक समझने लगते हैं। देव समाज के सेवक होकर भी सेवकी की प्रतिज्ञाओं की कोई परवाह नहीं रहती। गुरू की रोशनी की प्रतिज्ञाओं की कोई परवाह नहीं रहती। गुरू की रोशनी ने मुझे बहुत चौकस कर दिया है। मैं दुनिया - परस्तों या मन्द कर्म करने वालों, और राजनीति करने वालों से वैसे ही डरता हूं जैसे कौआ तीर से डरता है। मुझे अपनी रक्षा का फिक़र पड़ जाता है। उच्च संगत को बहुमूल्य महत्व का बोध भगवान का बहुत बड़ा उपकार है।

मैं 1956 में पक्के तौर पर विकासालय में आ गया था, विकासालय मुझे स्वर्गीय स्थान बोध होता था। उसमें निवास करने वाला प्रत्येक बड़ा सौभाग्यवान और प्यारा अनुभव होता था।

मोगा विकासालय के भीतर दोनों मंजिलों पर सारे कमरे कर्मचारियों, विकासार्थियों वा पक्के सत्संगिओं से भरे होते थे। उस समय 20 से ऊपर जन कर्मचारी थे। नारी आश्रम अलग था। बीच में लाईब्रेरी वा रसोई घर था। दूसरी तरफ आधी दर्जन के लगभग कर्मचारी स्त्रियां नारी आश्रम में रहती थीं। कुछ और फिरोज़पुर विद्यालय में रहती थी। जो महाराज के समय से थी। बजुरग उच्च कर्मचाारिणी श्रीमति सुशीला देवी जी, रामपुरा, महाराज के मन्दिरों में ठहरकर काम करती थी। सन्मान के योग्य श्रीमान गोपीचन्द जी फिरोजशाह में स्कूल की देखभाल करते थे। डाक्टर इकबाल सिंह जी का जोश बहुत ही प्रभावित करता था। बहुत रौनक और गहिमा गहमी रहती थी।

पहले उक्त उच्च कर्मचारियों में तीन नौजवान कर्मचारी थे। उनके लीडर बहुत सन्मान के योग्य पंडित गिरवर प्रसाद जी थे, जो एम. ए. गोल्ड मैडलिस्ट थे। दूसरे बहुत सन्मान के योग्य श्रीमान विकासदेव जी और श्रीमान गुरूसेवक सिंह जी थे, जो उस समय के बी.ए. पास थे। उनके साथी श्रीमान कृष्णकुमार जी थे। इन सबको मै अपने से बड़ा मानता था। उनके संसारिक सुखों के त्याग को देखकर मैं बहुत प्रभावित होता रहता था और उनके आगे दिल से झुकता रहता था। सब कर्मचारी मुझे बहुत प्यारे लगते थे। मुझे उनसे उच्च प्रेरणाएं

मिलती थी। मेरी 1958 में शादी हुई।

धीरे धीरे समाज से मुझे एक कमरे, बरामदे वा रसोई घर का छोटा सा मकान मिल गया। मुझे याद है कि श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी, श्रीमान मेवा सिंह जी और श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी को छोड़कर सब कर्मचारियों को अपने घर में खाने पर बुलाया। मुझे बहुत चाव था। मेरी 19 - 20 वर्ष की नौजवान पत्नी ने सारे घर आंगन को खूब धो संवार कर चमका दिया। कर्मचारियों को खाना खिलाने के लिए कुर्सियों, मेजों का प्रबन्ध किया गया। जब माननीय श्रीमान गिरवर प्रसाद जी की रहनुमाई में दर्जन के लगभग पुरुष कर्मचारी घर में पधारे तो मैंने श्रद्धा भाव से भरकर अपने दरवाजे से लेकर खाने की मेज तक अपनी पगड़ी बिछा दी, ताकि देवात्मा के सच्चे दूत, प्रचारक, कर्मचारी उस पर चरण रखकर पधारें। मेरा हृदय बहुत ही उच्च भावों से ओत प्रोत था। परन्तु द्वार पर रुककर श्रीमान गिरवर प्रसाद जी ने पगड़ी को एक तरफ करके ही प्रवेश करना उचित समझा। कर्मचारियों को खाना खिलाकर हमें जो तृप्ति मिली, जो धन्य धन्य हुए, आज लगभग 60 साल के बाद उस दृश्य को याद करके हृदय पाक खुशी से भर जाता है और आँखें नम हो जाती हैं।

उस समय जो भी कर्मचारी थे, उनसे जूनियर होने के कारण मैंने उनसे उच्च प्रेरणाएं प्राप्त की हैं। चाहे वह श्रीमान गोपीचन्द जी हों, चाहे भगत सिंह जी, चाहे श्रीमान मदन मोहन लाल जी, महता हरिचन्द जी, श्रीमान पंडित नेत राम जी, तपस्वी श्रीमान राम सिंह जी हो, चाहे श्रीमान नौध सिंह जी हों, चाहे श्रीमान मनोहर लाल जी हों। सबके जीवन से मैंने उच्च शिक्षा ली है। सब ही मेरे उपकारी हैं। उनका जीवन, उनका संग्राम सदा मुझे झुकाता रहा है और मेरा हित करता रहा है। मैं उच्च पदों पर आसीन होते हुए भी, श्रीमान पंडित नेत राम जी, श्रीमान राम सिंह जी को प्रार्थना कर करके उनकी चरण दबाने की सेवा करके धन्य धन्य हुआ हूं। उस समय की याद अब भी मुझे स्वर्ग लोक में ले जाती हैं। ऋषि श्रीमान नौध सिंह जी की महान धर्म पत्नि के बिमार होकर P.G.I. पहुँचने पर, वहां मैंने बहुत से नौजवानों को इकट्ठा किया और हम सबने खून दिया, उसकी खुशी आज भी हृदय को गद्‌गद् कर देती है। सब की उच्च घटनाएं मुझे उनके आगे आज भी नतमस्तक होने के लिए बेबस कर देती हैं और मेरा भला कर देती हैं। नारी कर्मचारी वर्ग जिसमें उच्च लोक वासी श्रीमति सुशीला देवी जी, श्रीमति देवकी देवी जी, देवी तुल्य सत्यावती जी सीकरी, बीबी शीला जी, बीबी सत्यावती जी (फेरूशहर) और ज्ञानवती जी थीं। मैंने सबसे बहुत लाभ उठाया था। कुछ एक के पास तो मैं जूता उतारकर जाता था। उन सबका त्याग मुझे झुकाने के लिए सदा काफी रहा है। अपनी उमर की या अपने से छोटी कर्मचारणियों को बेशक मैंने एक एक बार, अपने अहं के अधिकार में आकर दुखाया भी है, परन्तु गुरू महाराज ने मेरी नीच घृणा को उनमें से किसी भी सम्बन्ध में कभी जड़ नहीं पकड़ने दी। घंटा घर की चोटी की तरह एक एक सद्‌गुण मेरे सामने सदा चमकते रहे हैं।

ऐसे त्याग करने वाली, सच्ची साध्वियों के उच्च जीवन की संगत, जो आज कहीं भी नहीं मिलती, मेरे जैसे तुच्छ, ग्रामीण, जंगली, अनपढ़

गंवार जैसे जीव को बड़े सौभाग्य से प्राप्त थी। वह समय एक बार तो उड़ गया। एक एक का जीवन उच्च गुणों का गुलदस्ता था। क्या राम सिंह जी, क्या मनोहर लाल जी, सादगी और, त्याग, और सेवा भरी उच्च जीवन की मुर्तियां थी। उनकी संगत और उच्च आत्माओं की महकती जिन्दगियों की शरण ने मेरे सूखी लकड़ी जैसे जीवन में हरियाली के अंकुर फूटने लगवा दिए। मनोहर लाल जी मेरा बहुत अधिक मार्ग प्रदर्शन करते रहे। धीरे 2 मुझे बहुत सन्मान भी देने लग गए। जिसके मैं अपने को योग्य नहीं समझता था। अपनी बिमारी में सेवा का अधिकार देकर मुझे ऋणी बना देते थे। उस समय की संगत, विशेषकर सोलन की 1955-56 विशेष सत्संग में बीबी ज्ञानवती जी की प्रेरणा ने, मेरा नमक छुड़वा दिया, जो प्रण आज तक मेरा हित कर रहा है। और एक 2 से क्या फैज़ पाया है, उसका ब्यान नहीं हो सकता।

कर्मचारी वर्ग से अलग और भी कई सेवक थे, जिनके जीवन सदा प्रेरणा देते रहे। फिरोज़पुर में मास्टर भाग राम जी, श्री धर्मवीर जी प्रिंसीपल, देशमुख जी, प्रिंसीपल प्रेमबल जी, माता विद्यावती जी, माता जमना देवी जी, रूचलानी, सतवती जी सिंधी, मास्टर टहल-राम जी, लोड़िदा राम जी, सहजवालना, श्रीमान शादी लाल जी, श्री देवी चन्द जी, पंजाब मनिस्टर श्रीमान हित अभिलाषी जी, प्रिंसीपल अमरनाथ जी, काका जी, वोहरा जी, श्रीमान राम नरंजन जी कालका, सीता राम जी पंजोखड़ा, श्रीमान लाला लक्षमण दास जी, श्रीमान राम चन्द्र जी, श्री अर्जुन दास जी, श्रीमान रूप चन्द जी, ऐडवोकेट बाबू अमरनाथ जी, श्री मदन मोहन लाल जी दिल्ली, मास्टर इन्द्र सिंह, श्री राम करण दास जी भंडारी, श्रीमान राधा किशन जी और गुरदास मल्ल जी रूचलानी, श्री भावन सिंह जी, डाक्टर गंगा सिंह जी जैरथ, श्री हंस राज जी डोगरा आदि सब अपनी अपनी विशेष योग्यता और महानता रखते थे, उनके जीवन से मेरे जीवन ने अवश्य रंग पकड़ा है। और पक्के सत्संगी, मास्टर राजा राम जी, मास्टर झंडा सिंह जी 'अलम', श्रीमान गंडा सिंह जी, हरद्वार निवासी लहौरी मल जी, वैद्य रघुबीर सहाय जी, श्री शादी राम जी सूद बबीना, सब हस्तियां विशेष थी। उनके जीवन बोलते थे, और भी बहुत हैं।

प्रत्येक से मैंने फैज़ पाया है। किसी की कड़वी रोक टोक ने भी मेरा भला ही किया है। गुरू महाराज ने उच्च जनों भरी कश्मीर में वास करवाकर, अन्धेरे, मिथ्या और नीचता के सागर में डूबे और गोते खाते हुओं को फिर से चिरंजीव कर दिया।

सचमुच उस समय विकासालय स्वर्ग-धाम लगता था। एक 2 बार वहां का वास, अपार खुशी के साथ हृदय को भर देता है, जैसे ज़मीन पर पैर ही नहीं टिकता, ऐसा बोध होता है।

ऐसी नायाब संगत कभी किसी को नहीं मिलती। गुरू महाराज का यह महान उपकार था। जिनके अमृत ने उक्त रूहों को सिरजा था। गुरू महाराज के इस अति महान उपकार को मैं जितना महसूस करूं, जितना धन्य धन्य होकर धन्यवाद दूं। ऐसा सब ठीक ठाक कर सकने के लिए, मैं अपने आपको कभी भी पूरा योग्य नहीं समझा। आते जाते मोगा शरीफ़ की उस धरती को सजदा करके कुछ तृप्ति पाने का मेरा सदा यत्न रहता है।

(चलता) बलदेव सिंह

भावों की दुनियां और उसकी हकीकत

भगवान देवात्मा ने जिन कई मूल्यवान आत्मिक सत्यों और तत्वों का प्रकाश किया है, उनमें से एक सत्य यह है कि, मनुष्य का अस्तित्व नाना भावों से परिचालित होकर ही कोई गति करता है। अर्थात एक या दूसरे प्रकार की आन्तरिक या बाह्यक क्रिया या चेष्टा करता है। इस गति से आत्मा का अस्तित्व सदा परिवर्तन की दशा में रहता है, और परिवर्तन के अटल नियम के आधीन होकर जैसे नेचर के और लाखों अस्तित्व बदलते रहते हैं, वैसे ही वह भी बदलता रहता है। यह परिवर्तन दो प्रकार का होता है अर्थात उच्च या नीच परिवर्तन। जब कोई अस्तित्व पहले की अपेक्षा श्रेष्ठ बन जाता है, तब उसका यह परिवर्तन उच्च परिवर्तन कहलाता है, और कोई अस्तित्व अश्रेष्ठ बन जाता है, तब उसका यह परिवर्तन नीच परिवर्तन कहलाता है, जब कोई जन किसी और जन को नाना प्रकार के पापों से निकालना चाहता है, नाना प्रकार के मिथ्या विश्वासों और कुसंस्कारों से निकालने का संग्राम करता है, या इसी उद्देश्य के लिए लेख लिखता और पुस्तक रचता है, तब यह उसकी गति उच्च गति है। जब कोई जन बद-दयानति या व्यभिचार में लग जाता है, या किसी के गुण वर्णन या उसकी प्रशंसा को सुनकर ईर्ष्या से जलता है, तो उसकी यह गति नीच गति है। इन बढ़े हुए उच्च व नीच भावों के अनुसार ही प्रत्येक मनुष्य नेचर के नाना सम्बन्धों में अपना ड्रामा दिखाना शुरू कर देता है। जब कोई जन नेचर गत नाना सम्बन्धों में नीच गतियां ग्रहण करता है, तब जाने या अनजाने वह विनाश की तरफ जाता है, क्योंकि वह अपनी ऐसी नीच और हानिकारक गतियों के द्वारा नेचर के उस महासुन्दर और कल्याणकारी नियम को भंग करता है, कि जिसका नाम विकास है। जब विकास के नियम को भंग करता है, तब उसका विनाश होना अवश्यम्भावी है।

इसके साथ साथ हमें जिस और सत्य और तत्व को देखना है, वह यह है, कि जो भाव मनुष्य के भीतर नहीं है, उस भाव से जो चिन्ताएं और क्रियाएं उत्पन्न होती हैं, वह चिन्ताएं और क्रियाएं भी उसमें नहीं होंगी। मैं जन्म से वैष्णव हूं। सदियों से हमारा वंश वैष्णव वंश समझा जाता है। मेरे भीतर स्वभाविक ही मांसाहार के लिये सच्ची घृणा वर्तमान है, इसलिए मेरे भीतर कभी चिन्ता नहीं गुजरती, कि मांस की दुकान कहां है और मांस कहां से मिल सकता है। परन्तु मांसाहारी जन जब किसी नगर या शहर में जाता है, तब इस तलाश में रहता है, कि मांस कहां से मिल सकता है। यही हाल और पापों का है। भगवान देवात्मा की कृपा में मैं सब प्रकार के नशों के लिये घृणा रखता हूं। इसलिए जिस शहर में मैं वर्षों से रहता हूं, वहां भी मुझे कुछ पता नहीं, कि नशेदार वस्तुएं किस जगह से मिलती हैं, परन्तु नशेदार वस्तुओं का प्रेमक इसी शहर में आते ही पहले पहल यह तलाश कर लेता है कि मेरी ऐसी

प्यारी चीजें कहां से मिल सकती है। भगवान देवात्मा की कृपा से मैं कालेज के दिनों में उनका सेवक बन चुका था, श्रीमान भाई मोहन देव जी की संगत से पर स्त्री गमन के पाप को महा भयानक पाप समझता था। इसलिये मेरे विद्या प्राप्त करने के जमाने में मुझे यह भी पता नहीं लगा, कि मुम्बई जैसे बड़े शहर में कोई बाजारी औरतों का अड्डा भी है। जिस चीज के लिये प्रेम है, उसकी तलाश है, जिसके लिये घृणा है, उसकी तलाश कदापि नहीं।

जो भाव किसी के भीतर वर्तमान नहीं हैं, उस भाव से जो गतियां होती हैं, उनका साक्षात ज्ञान भी बिना इस भाव के कोई नहीं पा सकता। इसलिये नीच भावों का दास और उच्च भावों से विहीन जन उच्च जीवन धारियों को समझ नहीं सकते। एक भद्र जन जौ सैकड़ों रुपये माहवार सरकार से तन्ख्वाह लेता था और जिसके माताहत दर्जनों क्लर्क काम करते थे, और वह दान पुण्य के भाव से बिल्कुल खाली था, वह बार बार यह कहता था कि मैं यह मान ही नहीं सकता कि कोई जन निष्काम भाव से कोई दान दे सकता है या परोपकार का भाव कोई पोषण कर सकता है। वह खुले आम में कहता था कि जो दुनिया में बड़े बड़े परापकारी जन हैं, उन सबने ही अधिक धन इकठा करने की खातिर अपना जीवन अर्पण किया है। इसी प्रकार बड़े बड़े ऑफिसर जो बदचलन हैं, वह यह मान नहीं सकते, कि कोई जन स्त्रियों के सम्बन्ध में पवित्र भी हो सकता है। ऐसे उच्च भावों से विहीन सब जनों की कैसी कृपा पात्र अवस्था!

हम सारे के सारे उच्च या नीच भावों को आवृतकारी सामानों में पैदा करते हैं, और यह भाव कई सूरतों में अनजाने भी पैदा करते हैं। एक पादरी के लिए मशहूर है, कि वह निहायत ही शुद्ध जबान बोलने और शुद्ध बर्ताव करने वाला था। वह एक बार बुरी बीमारी में मुबतला हो गया और बेहोशी में जोर जोर से बहुत कुछ बोलने लगा। कहा जाता है, कि उसने इस कदर गन्दी गालियां दी जो सुनी नहीं जा सकती थी। कई जन हैरान थे। एक श्रद्धावान जन ने सब गालियां लिख ली। जब वह राजी हो गया, तब उस श्रद्धावान ने उसे बताया और हाथ जोड़कर कहा कि आप ने बेहोशी में यह गालियां दी थी। वह गालियां पढ़कर पादरी बहुत दुखी हुआ कि मैंने ऐसी गालियां दी नहीं। फिर बहुत सोच विचार के बाद उसने कहा कि जब मैं बच्चा था तब मेरे पड़ोस में माहीगीर रहते थे, वह गालियां दिया करते थे। और अनजाने तौर पर मेरे आत्मा ने उन्हें जज़ब कर लिया और बेहोशी में उनको निकालना शुरू किया।

मेरी एक मासी के बेटे मेरे भाई मुम्बई से आए और मेमोरियल मन्दिर लाहौर में आकर ठहरे। मुझ से पूछने लगे कि अमुक जन आपका मित्र जो मुम्बई में रहता है, क्या वह देव समाजी है, मैंने कहा कि वह सेवक तो है परन्तु तीन चार वर्ष से धर्म संगत से दूर रहते हैं। उसने फौरन कह दिया कि वह देव समाजी नहीं है। मैं यहां देव समाजियों को देखता हूं। वह जानते हों या न जानते हों, उनमें बाज ऐसी अच्छी बातें पाई जाती हैं जो उस सेवक में नहीं हैं। थोड़े दिनों के बाद ही वह सेवकी से

स्थगित हो गए। देव समाज के सैकड़ों जन जो आठ पापों से बरी हो कर सदाचार के भाव लाभ किए हुए हैं, वह उन्होंने देवसमाज के असरों में रहकर पाए हैं। जब यह दुनिया के आदमियों के सम्पर्क में आते हैं, तब वह अपने सुन्दर स्वभाव का असर दूसरों पर डालते हैं और औरों की दृष्टि में सम्मान पाते हैं। और कदर की चीज समझे जाते हैं। ज्यों ही देव समाज से कटकर और हालात में पड़ जाते हैं, त्यों ही पाए हुए सुन्दर स्वभाव को खो बैठते हैं। और बाहर के लोगों की नजर से भी गिर जाते हैं कि जिनकी नजरों में अपने पहले स्वभाव के कारण कदर और कीमत की चीज बने हुये थे। तब हम लोगों के लिए यह कैसा सौभाग्य का विषय है कि हम लोगों को देवात्मा के अमूल्य और उच्च परिवर्तनकारी देव प्रभावों में वास करने का अधिकार प्राप्त होता है और बहुत सारी सूरतों में अनजाने तौर पर हमारे नीच जीवन के कांटे झड़ जाते हैं और सदाचार के सुन्दर फूल फूट आते हैं। हम खुद भी धन्य धन्य हो जाते हैं और औरों को भी धन्य धन्य कर देते हैं। तब एक एक अधिकारी जन के लिए किस कदर नितान्त आवश्यक है कि वह देव समाज के ऐसे आत्म ज्ञान और आत्म बोध उत्पादक नादर सत्संगों के रक्षाकारी और जीवनदायक मण्डल में बार बार शामिल होते रहें।

सुन्दर साध्वी

किसी सच्चे गुणवान व्यक्ति का परिचय पाना, ऐसे व्यक्ति के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त करना, ऐसे सुन्दर जीवन को निकट से, हृदय की आंखों से निहारना मनुष्य का सब से बड़ा सौभाग्य है।

जैसे मोती हंसों के लिए चोगा बनते हैं, वैसे ही गुणवान व्यक्तियों की सुन्दरता हमारी नेकी की खुराक बनकर हमारे आन्तरिक जीवन को उभारती है। मेरे जीवन में श्रद्धा की खुराक बनने वाला एक अति सुन्दर साध्वी का गुणों से भरपूर जीवन रहा है, जिसके गुणों की सुन्दरता के आगे झुक झुक कर मेरा बार बार भला हुआ है। उसके गुणों का आज मैं पाठकों के साथ गुणगान करने की पवित्र खुशी प्राप्त कर रहा हूं।

शरीर की और विशेष रूप से मुख की सुन्दरता किसी किसी जन को विरासत में प्राप्त होती है और उसकी चमक बादलों में से बिजली की तरह निखर पड़ती है। चेहरे के यूसफ तो फिर भी देखने को मिल जाते हैं, पर ऐसे यूसफी चेहरे अति नायाब होते हैं, जो यूसफी सुन्दर दिलों के भी मालिक हों। यह कश्मीरी सुन्दरता की मूर्ति देवी यूसफों जैसा सुन्दर दिल भी रखती थी, यह इनमें निरालापन था।

पहली बार इस देवी के दर्शन लगभग 55 वर्ष से भी अधिक पहले एक आश्रम के रसोई घर में हुए थे, जब उनकी उमर 20 वर्ष के लगभग होगी। यह अत्यन्त सुन्दर कन्या पाकिस्तान से दुखों दर्दो के पहाड़ चीर कर किसी प्रकार भारत पहुंची थी

और कुछ समय बाद ही उन्होंने देव समाज के एक आश्रम में आश्रय ले लिया और उस वातावरण में ही अपनी इज्ज़त की रक्षा के सामान देखकर उस आश्रम को और देव समाज को जीवन का ठिकाना जानकर सदा के लिए अपना लिया।

यह देवी बिल्कुल अनपढ़ थी। शर्म झिझक की मूर्ति थी। चुप रहना उनके स्वभाव में था। खामोशी से सेवा करती रहती, आत्मा को जाग्रत करने वाली सभाओं में योगदान देती, परन्तु एक शब्द भी मुंह से जैसे नहीं बोलती थी। श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी जैसे भीष्म और तपस्वी ऐसी देवियों के रक्षक थे, जिनकी छत्रछाया में वह निश्चिन्त जीवन के दिन बिता रही थी।

इस देवी की योग्यता बढ़ाने के लिए उनको पढ़ाना शुरू किया गया, अच्छा दिमाग था, हिन्दी अच्छी प्रकार लिखने और पढ़ने लग गई। यूनिवर्सिटी की रतन की परीक्षा पास की ली और इससे बढ़कर सांसारिक डिगरियों के लिए उनका मन नहीं ललचाया। देव समाज के महान कर्मचारियों की सभाएं सुन सुन कर इस देवी के भीतर का जीवन निर्मल होता गया और चन्द वर्षो में ही वह भोली भाली सुन्दर बालिका ने एक गंभीर साध्वी और गुरु मिशन की प्रचारिका का रूप धार लिया। कई वर्षो के बाद अपने सौभाग्य को अनुभव करते हुए जब एक सभा में पहली बार वह अपने हृदय की गहराई से धन्यवाद के भावों से भरकर बोली तो उस सभा में मैं हाजिर था, मैं भी और लोगों की तरह हैरानी से भर रहा था कि सदा चुप रहने वाली कन्या आज किस प्रकार बोल रही है और किस प्रकार गुरु महाराज और उच्च कर्मचारियों को धन्यवाद दे रही है। ऐसा ब्यान बड़े बड़े पढ़े लिखे भी नहीं कर सकते। उनके ब्यान को सुनकर एक बुर्जुग पुकार रहे थे कि शेर का शिकार हुआ है, जो यह कन्या अपनी चुप्पी तोड़कर इस प्रकार सुन्दर बोलने के योग्य हो गई है। गुरु संगत का जादू उनमें बोल रहा था।

देव समाज के विशेष वातावरण ने इस सफेद मिट्टी के बुत में नई जान संचार कर दी और ऐसी रोशनी भर दी कि उसकी धरती पर बोझ ज़िन्दगी बरकतों की पुंज बनकर चमक उठी, जो एक अबला के रूप में देव समाज की शरण में आई थी, वह देव समाज में एक विशेष देवी बनकर दूसरों के भले के लिए निस्सार होने लगी। उनकी योग्यता इतनी निख़र गई कि वह एक योग्य प्रचारिका, बहुत प्रभावशाली तक़रीर करने वाली बहुत सरगर्म वर्कर, और दूसरों की सेवा में सर्वस्व निछावर करने वाली फरिश्तों की कतार में आ खड़ी हुई।

ऐसी नेक और हसीन लड़की के लिए सांसारिकता में बहुत अच्छा स्थान मिल सकता था, उन्होंने कभी दुनियादारी की ज़िन्दगी के प्रति आर्कषण अनुभव नहीं किया। दुनिया परस्ती पर लात मारकर एक सच्ची साध्वी का जीवन बिताया। जवानी में नीच सुखों के आकर्षण मनुष्य को बर्बाद कर देते हैं और किए कराए पर पानी फेर देते हैं, परन्तु इस देवी ने नीच प्रलोभनों से सदा बचकर एक तुच्छ साध्वी का जीवन बसर करने का पक्का निश्चय कर लिया। 30-32 वर्ष तक कमाल की वफादारी से निभाया। इस देवी का सांसारिकता की दलदल में से इस प्रकार इतना ऊंचा उठने की तस्वीर जब मन

की आंखों के सामने आ जाती है तो श्रद्धा से सिर उनके चरणों में सजदा हो जाता है और जुबान से धन्य धन्य पुकारने के लिए इस तप के आगे मजबूर हो जाता हूं। तन के नीच सुखों की गुलामी बड़े बड़े चतुर मनुष्यों की मिट्टी पलीत कर देती है और उनकी हस्ती का जलूस निकाल देती है, आप इस गुलामी से बहुत मुक्त थी। पवित्रता आपके महान जीवन का सुन्दर और कीमती भूषण रहा है। पवित्रता की नायाब बरकत आपको प्राप्त थी। तन सुख अनुराग ने आपको कभी पागल नहीं होने दिया। बहुत सीमा तक आपने शूरवीरों की तरह इस पर फतह प्राप्त की। किसी मनुष्य को अपने दिल दिमाग में गहरा नहीं बसाया। किसी मनुष्य की निरन्तर निकटता को प्रोत्साहित नहीं किया। पुरूषों में रहकर, उनके साथ काम करके, ऐसी कमज़ोरी का कभी शिकार नहीं हुई। आपका यह पहलू पहाड़ों की शिख़रों को छूने जैसा महान दिखाई देता है। आपके पवित्र रूप के आगे सजदा करके मैं पवित्रता का पाठ पढ़ने का यत्न करता रहा हूं। आपका जीवन पवित्रता का चश्मा है। यह और अधिकारियों को पवित्रता बांटता है।

धन पदार्थो के बन्धन से आप आजाद थी। धन आदि का आपको कोई प्रेम नहीं था। लाखों, करोड़ों मनुष्यों से जिनमें धन के प्रेम का भूत होता है, आप कहीं श्रेष्ठ थी, आपको अपने अधिकार के तौर पर हज़ारों रुपये अचानक प्राप्त हो गए। आपने उनको छूना तक भी जैसे पसन्द नहीं किया। आपके पास पहले भी कोई धन राशि नहीं थी। आपके पिता और भाई वर्तमान नहीं थे। आपको वह रकम न अपने लिए रखने का और न ही अपने सम्बन्धियों के लिए रखने का ख़्याल तक आया। झट यह हज़ारों की रकम समाज को सौंपकर आपने सच्ची सन्तुष्टि अनुभव की। एक बार रकम देकर फिर कभी उसको याद नहीं किया। एक सपने की तरह उस समय के हज़ारों रु० के दान को आपने विसार दिया। कभी यह कहते नहीं सुना, हाय ! मेरा रुपया, या कभी दान की डींग नहीं मारी, यह आपके उदार हृदय के लिए सम्भव ही नहीं था। आपकी कमाल दर्जे की उदारता और धन के प्रति कमाल का वैराग्य आपके हृदय को अनोखी सुन्दरता प्रदान करता था और जिसने आपको करोड़ें इन्सानों से ऊंचा निख़ार दिया। ऐसा त्यागी, लोभ लालच से मुक्त, दानी और दीन हृदय फरिश्तों को ही नसीब होता है।

स्त्रियों को साधारणत: खाने पीने की ललक होती है। वह मीठी और चटपटी चीजों के खाने की शौकीन होती हैं। आप ऐसी किसी लालसा की शौकीन नहीं थी। रूखा सूखा खा कर तसल्ली में रहती थी। बहुत थोड़ा और सादा भोजन आपकी आदत में शुमार हो गया था।

कपड़े या पोशाकें पहनने का शौक नहीं था। सादा दो चार पोशाकें या धोतिएं ही आपकी पोशाकों का भंडार था। सादे कपड़े भी उनकी शोभा को बढ़ा देते थे और उन्हें जेवरों का कोई आर्कषण नहीं था। बड़ी सुगमता से वह इन प्रलोभनों से ऊपर उठ गई थी। ऐसे और पदार्थो की धूलि भी वह अपने ऊपर नहीं पड़ने देती थी।

श्रद्धा, पवित्रता, हमदर्दी, कृतज्ञता का आपका जीवन मुंह बोलती तस्वीर था। जब कभी कोई स्त्री बिमार होती, उसकी सेवा के लिए रहमत के फरिश्ते

का रूप धारण कर लेती। पी. जी. आई जैसे बड़े हस्पतालों में वह कई महीने उच्च दर्जे की नर्सो की तरह सेवा करती। अपने मरीज की नहीं, उल्टा वह और मरीज़ों की सेवा करने के लिए बेबस हो जाती। नर्सो का काम करती। नर्से उनकी सहेलियां बन जाती। मरीज़ों की सेवा में उन्हें इतना रस आता था कि कई बार वह कहती कि यदि समाज आज्ञा दे तो मैं हस्पतालों में मरीजों की सेवा करते करते अपना जीवन दे दूं। जान तोड़कर रात दिन बेग़ाने मरीजों की सेवा करती, यह दृश्य देखने के योग्य होता था। वह रहमत की देवी का साकार रूप उस समय बन जाती थी। स्त्रियों को अपनी बिमारी के समय सेवा की आफर वह करती रहती। फिर चाव भाव से वह सेवा करके धन्य धन्य हो जाती थी।

आप फरिश्तों की तरह ही निर्मल और निष्कपट थी। सीधा साधा आपका स्वभाव, कोई छल कपट नहीं, बड़ा कमाल का कोमल और सुन्दर जीवन था।

अहं का भाव आम मनुष्यों की तरह उन्हें भी मिला था। इस कारण जब कभी उन्हें कुछ गुस्सा आता और किसी के प्रति कुछ घृणा पैदा हो जाती, परन्तु यह घृणा अस्थाई होती थी, गहरी घृणा, जो द्वेष का रूप धारण करले यह आपके भीतर नहीं थी।

श्रद्धा से भरकर गुरु महाराज के कार्य में सारी उमर लगा दी। उनकी तकरीर, उनके भजन विशेष प्रभाव रखते थे। एक एक गांव में नगर कीर्तन करती, बिमार होकर भी गले में हारमोनयम डाल कर भजन गाते हुए प्रभात फेरियां करती, यह पवित्र दृश्य देखने योग्य होता था। श्रद्धा भाव ने ही आपको गुरु महाराज के लिए कुर्बान होने के लिए मजबूर कर दिया। श्रद्धा भाव ने ही स्थिरता बख्शी। वफा का ताज पहनने के योग्य हुई, तिल तिल अपना गुरु पर कुर्बान कर दिया।

धर्म के भावों ने आपको दुनियावी सामानों की तरह दुनियावी सम्बन्धियों से भी वैरागी बना दिया। आप दुनियावी सम्बन्धियों के लिए कोई कड़ा बन्धन नहीं रखती थी। इस प्रकार की कमज़ोरी का उनका जीवन कभी शिकार नहीं हुआ। मोह के भारी बन्धन मनुष्य का मुरदा वीरान कर देते हैं, परन्तु वह उनसे बहुत ऊपर थी।

आपका जीवन उच्च भावों की सुन्दर महक से भरपूर था। मनुष्य आम करके सडांद का टोकरा ही होता है। परन्तु आपका जीवन निराले सतगुरु के प्रभावों को पाकर महकदार बन गया। ऐसे महक भरे जीवन को देखना और उसकी महक से प्रभावित होना और नीचता की दुर्गन्ध को छोड़ कर सुगन्ध को अपनाना किसी मनुष्य का बहुत बड़ा अधिकार है।

आज कल के साथी सेवकों के सम्बन्ध में पवित्र दिनों में ऐसी अन्दर और बाहर से अति सुन्दर साध्वी के पाक जीवन की पाक महक याद करके हम अपने कठोर हृदयों को सरस करने का सौभाग्य पाने की खुशी प्राप्त करके धन्य धन्य हो सकें और इस फख़र के साथ कि सत्गुरु ने ऐसे अनमोल हीरे धर्म सम्बन्धियों का दान हमें दिया है, उन्हें धन्यवाद दे सकें। उनके कदमों में लाख लाख बार सजदा करने के लिए इच्छुक हो सकें।

blue ink

Review

The Highest Meaning of Life
Sukhdev Singh
Xlibris, 620 pages, (paperback)$24.99, 9781543487947
(Reviewd : March, 2018)

Sukhdev Singh, director of Devatma Organization U.K., presents the principles of Dev-Dharma in this shelf-bending offering.

This belief system, founded by an Indian man known as Devatma, uses "scientific method to discover human nature and its destiny." It teaches that the soul is biological in origin and that evolution allows man to pursue Dev-Dharma's highest value of Truth, Goodness, and Beauty. On this evolutionary path, man struggles to subdue "low-loves and low-hates" in order to replace them with "high loves and high hates". When man has attained this purification, he achieves a state of altruism, " true harmony with existence in nature. "Nature is made of "four kingdoms.....humans, animals, plants, and the physical worlds." and the perfect man lives in service to them.

These basics are made reasonably clear in the Foreword and first chapter. The vast majority of the remaining book is a re-iteration and expansion of these principles in the form of poems, short, numbered paragraphs, and lists of bullet points.

The Highest Meaning of Life सुखदेव जी द्वारा प्रकाशित पुस्तक को पढ़कर इंग्लैंड से और अन्य लोगों के विचार (Reviews) सुखदेव जी के पास आए है। यह ब्लू ईंक के प्रकाशक के विचार (Reviews) हैं, जिसका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है :-

The Highest Meaning of Life
सुखदेव सिंह
Xlibris, 620 pages, (paperback)$24.99, 9781543487947
(Reviewd : March, 2018)

सुखदेव सिंह डारैक्टर देवात्मा Organization, U.K. ने देवात्मा के सिद्धान्तों को इस पुस्तक में "उच्च स्तरीय" रूप में प्रस्तुत किया है।

यह मत भारतीय द्वारा, जो देवात्मा के नाम से जाने जाते हैं, ने बताया हैं। देवत्मा मानवीय स्वभाव और इसके भाग्य को खोजने के लिए "वैज्ञानिक तरीकों का प्रयोग करते हैं।" यह सिखाते और बताते हैं कि मनुष्य की उत्पत्ति जैविकी (Biological) हैं (अर्थात इसकी उत्पति होती है) विकास बताता है कि मनुष्य देव धर्म की सर्वोच्च वैल्यू सचाई, भलाई और सुन्दरता को समझे। इस विकास के मार्ग पर चलकर मनुष्य "नीच प्रेम और नीच घृणा" को घटाने के लिए संघर्ष करता है, ताकि उन्हें "उच्च प्रेम और उच्च घृणा" में बदला जा सके। जब मनुष्य इस पवित्रता को पा जाता हैं, तो वह सात्विक वा विशुद्ध परोपकारी बन जाता हैं। जो नेचर के साथ सम्बन्ध मेल की अवस्था हैं। नेचर चार प्रकार के भागों में बंटी हुई हैं। मनुष्य, पशु, पौधे और भौतिक जगत। सम्पूर्ण मनुष्य दूसरों की भलाई में समर्पित होना है।

यह आरम्भिक सत्य तर्क पूर्ण भूमिका वा पहले अध्याय से स्पष्ट किए गए हैं। बाकी के अध्यायों को इन सिद्धान्तों के साथ कविताओं के या छोटे छोटे पैराग्राफ ओर बुलेट पुआंईटस द्वारा विस्तार से बताया गया है।

शुभ संग्राम

गंगानगर : मल्लेका से श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान बलबहादुर सिंह जी गंगानगर पहुँचे, यहां रात को 8.30 बजे सभा रखी गई।

15.3.18 रात 8.30 बजे । सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। उन्होंने बताया कि पहले बहुत मुश्किल से स्कूलों में बच्चों को लाया जाता था, विद्या की कोई क़दर नहीं थी। इसी प्रकार जप, तप, पाठ, विश्वास ही धर्म माना जाता था, अब भी माना जाता है। इसलिए पापाचार और मिथ्याचार की भरमार है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने सत्य धर्म की स्थापना की है, जो पापाचार और मिथ्याचार को मिटाता है, परन्तु अभी मानव जगत में उसकी क़दर नहीं। परन्तु ऐसा समय नेचर के विकास क्रम में अवश्य आएगा, जब सत्य धर्म की महिमा दर्शाई जाएगी।

16.3.2018 सुबह 9 बजें :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि मनुष्य न अपने परिचालक भावों को जानते हैं और न उनके परिणामों को जानते हैं । शूगर बढ़ जाती है, परन्तु मीठा खाने से परहेज नहीं कर सकते। शराब, मांसाहार से ज़िन्दगियां तबाह हो रही हैं, परन्तु नीच सुख उसे देखने नहीं देते। सैर के लिए समय नहीं, धन अनुराग और आलस्य पेश नहीं जाने देते।

सभापति जी ने शरीर सम्बन्धी सुख अनुराग अर्थात स्वाद, आलस्य, काम सुख अनुराग से होने वाली हानियों का वर्णन किया।

सेहत, मानसिक विकास वा भावात्मिक विकास के नियम हैं, नीच भाव उस नियमों को जानने तक नहीं देते। अपनी चलाने वाली शक्तियों का ज्ञान न होने से दुख, विनाश व बर्बादी आती है। गुरू महाराज अपनी ज्योति शक्ति देकर मानवता का सबसे उद्धार करते हैं। इसके उदाहरण प्रस्तुत किए।

16.3.2018 रात 8.30 बजे:- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। देव समाज की संगत में आकर श्रद्धेय श्रीमान धर्मबल जी के भीतर रिश्वत के लिए गहरी घृणा पैदा हो गई। पटवारी होने पर भूखे रहना कबूल किया, परन्तु रिश्वत से दूसरों का खून पीना स्वीकार नहीं किया। कानूनगों श्रीमान जुल्ली राम जी के भीतर गुरू के प्रभावों ने रिश्वत के प्रति एक उपदेश से ही घृणा पैदा कर दी।

नशों और पापों से घृणा पैदा करना धर्म का काम है। उपकारियों के उपकारों को दिखाना, दूसरों के गुणों को दिखाना, ईमानदार बनाना, पवित्र बनाना, अपनी ग़ल्तियों को स्वीकार करने के योग्य बनाना धर्म का काम है, जो देव धर्म को छोड़कर कोई नहीं कर रहा। इसलिए उनके प्रभावों की संगत की आवश्यकता है।

17.3.18 सुबह 9 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। उन्होंने बताया कि मनुष्य दुखी क्यों है, क्योंकि वह चार पक्षों में अन्धा है। पहली अन्धता दूसरों के गुणों को न देखने की है, अपने माता पिता के भी गुण नज़र नहीं आते, दूसरी अन्धता, दूसरों के दुखों, अभावों के प्रति हमदर्दी

Regd. Postal No.CHD /0077/ 2018-2020
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

का न होना है। तीसरी अन्धता उपकारियों के उपकारों को न देखने सम्बन्धी है। बड़े से बड़े उपकार पाकर भी मनुष्य उनके प्रति अन्धा रहता है। चौथी अन्धता अपने दोष वा कमियां न देखना है। इन अन्धताओं में रहकर प्रत्येक मनुष्य दुखी है और उसके हाथों दूसरे दुखी रहते हैं। इनकी जागृति देव प्रभावदायक संगत में मिलती है।

17.3.18 शाम 8.30 बजे :– सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। इस सभा में नीच घृणा से क्या हानियां हैं, उनका वर्णन किया। जो मनुष्य चाहे वह हमारा कितना बड़ा उपकारी हो, यदि हमारे सुख में रुकावट डालता है, घृणा भड़क उठती है, इससे कई बार घातक घटनाएं हो जाती हैं। एक ईमानदार पोस्ट मास्टर की घटना बताई, उसके मुलाज़िम से छोटी सी ग़लती हो गई, उसे लताड़ते लताड़ते उस अफसर की दिल के दौरे से मौत हो गई। भगवान देवात्मा के देव प्रभाव नीच घृणा की भयानक अग्नि को दिखाते है और उससे मोक्ष देने की सर्मथ्य रखते हैं।

18.3.18 सुबह 9 बजे :– धर्म केवल मनोकामनाओं को पूरा करने के साधन बने हुए हैं। डर और लालच धर्म को मानने के लिए मजबूर करता है। देव धर्म के संस्थापक देवात्मा हैं। जिनके भीतर मनुष्यात्माओं के पापों को दिखाने और उनसे निकालने की क्षमता है। जिस प्रकार सोलर Energy आज की आवश्यकता बनती जा रही है, उसी प्रकार मनुष्य के लिए देव प्रभावों की आवश्यकता को अनुभव किया जाएगा। देव धर्म का देव दर्शन बिल्कुल निराला है। यह विज्ञान मूलक है, विकास क्रम की देन है। सम्बन्धों में मेल लाने का देव धर्म साधन है।

विकास के नियम का एक रूप यह है जो मनुष्य किसी के काम आता है, उसका विकास होता है। ज़रूरतमन्दों वा उपकारियों के अवश्य काम आना चाहिए। स्वार्थ आत्मा का बर्बाद कर देता है।

(चलता)

दान प्राप्ति सम्बन्धी भगवान देवात्मा का फरमान

यह दान का असूल नहीं है कि उसके लिए बार बार तक़ाज़ा (आग्रह) किया जए

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री–देव–धर्म–मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक
"धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*
म. नं. 3154, सैक्टर 21–डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts